

।। श्री हनुमान चालीसा दोहा ।।

श्रीगुरु चरन सरोज रज नजि मन मुकुर सुधारि।
बरनउ रघुबर बमिल जसु जो दायकु फल चारि।।
बुद्धाहीन तनु जानकै सुमरिँ पवनकुमार।
बल बुधा बिदिया देहु मोहा हरहु कलेस बकारि।।

।। चौपाई (1 - 40) ।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तह्रिँ लोक उजागर ॥ १ ॥
राम दूत अतुलति बल धामा । अंजना पुत्र पवनसुत नामा ॥ २ ॥
महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥ ३ ॥
कंचन बरन बरिज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचति केसा ॥ ४ ॥
हाथ बजर औ ध्वजा बरिजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥ ५ ॥
शंकर सुवन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥ ६ ॥
वदियावान गुनी अति चातुर । राम काज करबि को आतुर ॥ ७ ॥
प्रभु चरतिर सुनबि को रसयिा । राम लखन सीता मन बसयिा ॥ ८ ॥
सूक्ष्म रूप धरी सयिहा दिखावा । बकिट रूप धरि लंक जरावा ॥ ९ ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥ १० ॥
लाय सँजीवन लिखन जयिाए । श्रीरघुबीर हरषि उर लाए ॥ ११ ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहासिम भाई ॥ १२ ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावै । अस कहा श्रीपति किंठ लगावै ॥ १३ ॥
सनकादकि ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहति अहीसा ॥ १४ ॥
जम कुबेर दकिपाल जहाँ ते । कबी कोबदि कहि सकै कहाँ ते ॥ १५ ॥
तुम उपकार सुग्रीवहा कीन्हा । राम मलाय राजपद दीन्हा ॥ १६ ॥
तुम्हरो मन्त्र बभीषन माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥ १७ ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहा मधुर फल जानू ॥ १८ ॥
प्रभु मुद्रकि मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघ गिये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्जा बनि पैसारे ॥ २१ ॥
 सब सुख लहै तुम्हारी शरना । तुम रक्षक काहू को डरना ॥ २२ ॥
 आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक ते काँपे ॥ २३ ॥
 भूत पशाच नकिट नहि आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥
 नासै रोग हरै सब पीरा । जपत नरितर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥
 संकट तैं हनुमान छुड़ावै । मन कर्म बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥
 सब पर राम तपस्वी राजा । तनि के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥
 और मनोरथ जो कोई लावै । सोहि अमति जीवन फल पावै ॥ २८ ॥
 चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसद्धि जगत उजयारा ॥ २९ ॥
 साधु संत के तुम रखवारे । असुर नकिंदन राम दुलारे ॥ ३० ॥
 अष्ट सद्धि नौ नद्धि के दाता । अस बर दीन्ह जानकी माता ॥ ३१ ॥
 राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥
 तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बसिरावै ॥ ३३ ॥
 अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरभिक्त कहाई ॥ ३४ ॥
 और देवता चतित न धरई । हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥
 संकट कटै मटै सब पीरा । जो सुमरि हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥
 जय जय जय हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥ ३७ ॥
 जो शत बार पाठ कर कोई । छुटहि बंदा महा सुख होई ॥ ३८ ॥
 जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥
 तुलसीदास सदा हरिचेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

!! पावन न संकटा हरन,
 मंगल मूर्तरूप,
 राम लखन सीता साहति,
 हरी बसहु सुर भूप !!